जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम

लेखक : डॉ. सागरमल जैन

Scanned by CamScanner

डॉ. सागरमल जैन

जन्म - 22.02.1932, शाजापुर (म.प्र.)
शिक्षा - साहित्य रत्न - 1954 (अर्थ शास्त्र)
एम.ए. (दर्शन शास्त्र) - 1963
पी.एच.डी. - 1971

अकादमिक उपलब्धियाँ-

प्रवक्ता (दर्शनशास्त्र) म.प्र. शासन शिक्षा सेवा - 1964-67
सहायक प्राध्यापक म.प्र. शासन शिक्षा सेवा - 1968-85
प्राध्यापक (प्रोफेसर) म.प्र. शासन शिक्षा सेवा - 1985-89
निदेशक पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी - 1979-1987 एवं 1989-1997

लेखन - लगभग 60 पुस्तकें
सम्पादन - लगभग 200 पुस्तकें
प्रधान सम्पादक - जैन विद्या विश्वकोष
(पार्श्वनाथ विद्यापीठ की महत्वाकांक्षी परियोजना)

पूर्वसदस्य- विद्वत परिषद् एवं विश्वविद्यालय, भोपाल
सदस्य - विद्या परिषद् जैन विश्वभारती संस्थान, लाडँनू
- मानद निदेशक, आगम
- अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर
- साधारण परिषद् एवं कार्यकारी परिषद्, सांची विश्वविद्यालय

प्रो. इमेरिटस- जैन विश्वभारती मान्य वि.वि. लाडंनू (राज.)
सम्प्रति-
संस्थापक- प्रबंध न्यासी एवं निदेशक प्राच्य विद्यापीठ शाजापुर (म.प्र.)
पूर्वसचिव एवं निदेशक - पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी
विदेश भ्रमण- यू.एस.ए., शिकागो, राले, ह्यूटन, न्यूजर्सी, उत्तरीकरोलीना, वाशिंगटन, सेनफ्रांसिस्को, लॉस एंजिल्स, फिनीक्स, सेंट लूईस, पिट्स बर्ग, टोरंटो (कनाडा), न्यूयार्क,

-प्राप्त पुरस्कार-

प्रदीपकुमार रामपुरिया पुरस्कार - 1986 एवं 1998

स्वामी प्रणवानंद पुरस्कार - 1987

डिप्टीमल पुरस्कार - 1992

आचार्य हस्तीमल स्मृति सम्मान - 1994

विद्यावारधि सम्मान - 2003

प्रेसीडेन्सीयल अवार्ड ऑफ जैना यू.एस.ए. - 2007

वागार्थ सम्मान (म.प्र. शासन) - 2007

गौतम गणधर सम्मान (प्राकृत भारती) - 2008

आचार्य तुलसी प्राकृत सम्मान - 2009

विद्याचंद्रसूरी सम्मान - 2011

समता मनीषी सम्मान - 2012

₹700.00

ISBN 938363434-0
9 789383 634347

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ-341306, राजस्थान
www.jvbi.ac.in

Scanned by CamScanner